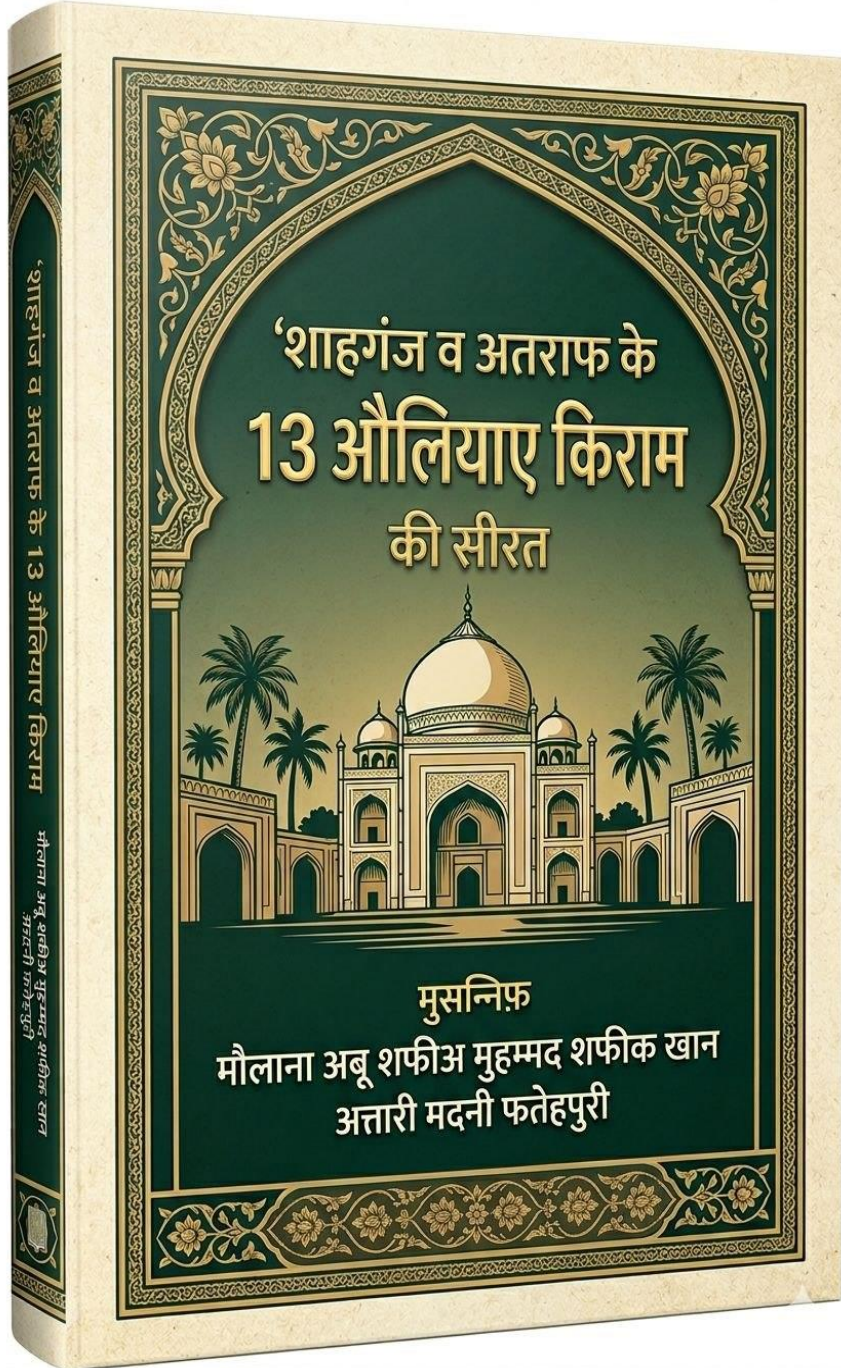
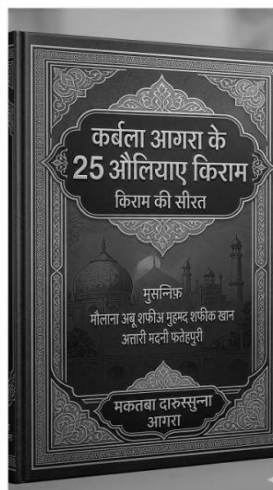
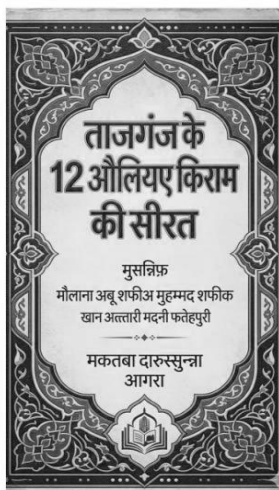
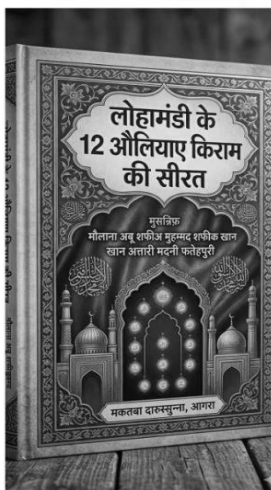
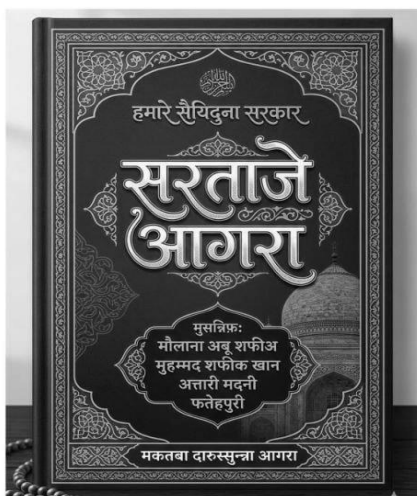
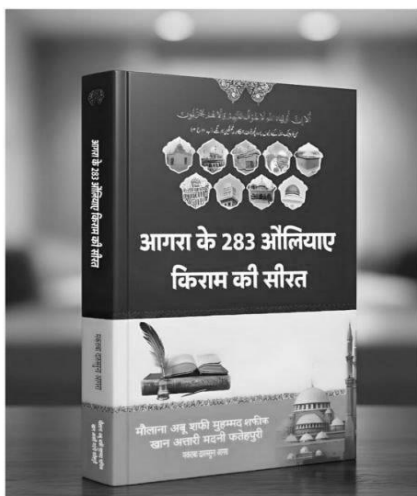




आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों ।



किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ़ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअत होने की वजह से अपने नाम के साथ अत्तारी लिखते हैं, आपकी विलादत कस्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ए. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क्रियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ़ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उलूम बनाम जामिया अरबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में **क्रारी इक़बाल अहमद अत्तारी** से कुरआने पाक नाज़िरा और हज़रत **मौलाना अतीकुर्रहमान मिस्बाही** से **दर्से निज़ामी** के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ़ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल

जामिअतुल अशरफिया मुबारकपुर आ'जमगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल इलूम ग़ौसिया (जो जिला आ'जमगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना, फैज़ाने अत्तार नेपालगंज, नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए हदीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फरागत के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, आगरा तशरीफ़ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअतुल मदीना तशरीफ़ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआत के दरजए सानिया में चलने वाली इल्मे सर्फ़ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ में चलने वाली इल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह अश शफ़ीकुन नोअमानी तसनीफ़ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ़ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली हदीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह शफ़ीकिया तहरीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफ़ात का सिलसिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिअ आजम हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़िव्या की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक्रर्रि और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक्रतन फ़वक्रतन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ़ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत अता करके मौसूफ़ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आजिज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारक पर हाज़िरी का तरीक़ा येह है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारका की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक्रा! आप पर सलाम हो।

(فتاویٰ رضویہ، ۹/۵۲۲، خزائن آراء و فتاویٰ مجلس مرکز الاولیاء لاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलगरज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो।

आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़

عَنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैखुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनकूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर खुसरू रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ खुसरू! मशाइख़ के मलफ़ूजात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुजुर्गानि दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे खाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन कुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क्रियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْزَنْ أَلَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿۱۱۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (प, ४, आल عمران, ११९)।

लेकिन उन बुजुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, खाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है ।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए । आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुजुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

खानवादे चिश्तिया के बुजुर्गाने दीन

खानवादे चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख सिधारी चिश्ती, शैख ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुजुर्गाने चिश्त अहले बहिश्त का तज़किरा इस किताब में मौजूद है ।

खानवादे नक़्शबंदिया के बुजुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए शत्तारिया के बुजुर्गाने दीन

और मशाइखीने शत्तारिया में शैख ज़ियाउल्लाह, शैख अब्दुल्लाह, शैख बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए मदारिया के बुजुर्गाने दीन

और खानवादाए मदारिया में शाह फ़र्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़िकरा मौजूद है ।

नक्शबंदिया पौधे में चिशितया शाख पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूर मारुफ़ है, इस की शाखें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुन्इम, खलीफ़ा अबुल कासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख वली मुहम्मद वगैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है ।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख अबुल फ़त्ताह, मीर अबुल गैस बुखारी, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद अहमद बुखारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख बा यज़ीद शरवानी, शैख बा यज़ीद खवेशगी, ख्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुखारी, शैख चंदन कुरैशी, मौलाना शैख हसन शीराज़ी, शैख हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख्वाजा खिज़र, शैख खलील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफीअ सब्ज़ पोश, मीर रफीउज़्ज़मान, शैख सालिम, सक्रा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल्लाह खटवासन, शैख अब्दुल्लाह बुखारी, शैख अब्दुलहकीम, ख्वाजा अब्दुर्रुफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख अबदी, शैख फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख कमाल, शैख कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख मुहिबुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुखारी, शैख मुहम्मद ज़ाहिद, शैख मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख नाज़िर, शैख नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख यूसुफ़ लंक, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियाँ रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी खाकी शाह, बीबी कुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं ।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक्रअत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक़र्रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, खुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख बुढन शत्तारी, शैख चंदन कुरैशी, शैख नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख अबुल फ़तह मक्की, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख मुबारक, शैख ज़ैनुद्दीन, शैख शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारंगी वगैरा बाबरी, हुमायूनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज़्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख मुनव्वर चिश्ती, शैख आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल वहहाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख अब्दुर्हमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़ल, शैख अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्ज़ुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईखीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख मुहम्मदी, शैख मुहम्मद सालेह, शैख नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्शीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सलतनत के तनज़्ज़ुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्ज़ुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफ़ा और मशाईखीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक्ररीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक़ यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईखीन की खानकाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क्रद्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ़ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए क़िबार यानी बड़े औलियाए क़िराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वग़ैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवमैँट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख़
तुर्बुतों में खाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
खाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की खानकाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बागात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर गैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में गैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिलज़, कॉटन मिलज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरों मारुफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज़्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के बुज़ुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख़्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़््शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने “बोस्ताने अख्यार” नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम “आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत” दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर खुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्हीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी खूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़िकरा मुस्तनद तारीखी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक्रार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला खुद को आगरा की गलियों, खानकाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक्किक्कीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीखी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक्कीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

📖 **सदकए जारिया का बेहतरीन मौका** 📖

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक्राबिर व औलियाए किराम की मुकद्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आखिरत सँवारें।

📖 किताब: बोस्ताने अख्यार

🏠 मौजू: आगरा के 283 बुजुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, गरीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक्रसीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक्रसीम रेट:

◆ 1 किताब — ₹350

◆ 5 किताब — ₹1750

◆ 10 किताब — ₹3500

✨ जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

✨ बुजुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल कीमत **700 रुपये** रिआयती कीमत **350 रुपये**

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की प्यारी सीरत शाहगंज

(1) शैख अबू बक्र कुरैशी

सुल्तान सिकन्दर लोदी की इल्म दोस्ती और कमाल पर्वरी की कशिश ने शैख अबू बक्र कुरैशी रहमतुल्लाह अलैह को अपने वतन से आगरा में खींच लिया था, रस्मी उलूम में तबहूर यानी कमाल हासिल और खुदा शनासी की आँखें रौशन थीं।

मनकूल है कि एक रात को हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुलाज़िमत आप रहमतुल्लाह अलैह को नसीब हुई, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इरशाद हुआ कि जाओ वो ज़मीन जिसमें असा गाढ़ा गया है तुम्हें मर्हमत हुई। उस में एक कुँआं खुदवाओ। सुब्ह को आप रहमतुल्लाह अलैह उस मक़ाम पर जो ख्वाब में बताया गया था पहुंचे तो असा के नोक के बराबर उस जगह को नमनाक यानी गीला पाया। आप रहमतुल्लाह अलैह ने निहायत कोशिशो मेहनत से उस जगह कुँआं खोदा जिसमें निहायत शीरीं और खुशगवार पानी निकला, खुदा मालूम येह मुक़द्दसो बरतर कुँआं कौन सा है यानी उस कुँवें का पता ना चल सका।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने वसाया इमाम मुहम्मद और उसूले बज़्दवी पर एक नुक्ता आरा शरह लिखी थी, हरमैन शरीफ़ैन के सफ़र के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह जोगी पुरा में दफ़न किए गए।

राक़िमे बोस्तान मज़ार मुबारक की तलाश में जोगी पुरा गया जो मुहल्ला शाहगंज से एक मील के फ़ासिले पर एक मौज़ा है, बावजूद बहुत तलाश करने के मज़ार का सही पता तो ना चला मगर गुमान ग़ालिब है कि आप रहमतुल्लाह अलैह की आख़िरी आराम गाह वही है जो आबादी मौज़ा से मगरिब यानी पच्छिम की जानिब थोड़े फ़ासिले पर और फ़तेहपुर सीकरी की पक्की सड़क से जुनूब यानी दख़िखन को मील नंबर 3 और 4 के बीच वाक़ेअ है।

खेतों के दर्मियान में एक मुख़्तसर सा हिस्सा छूटा हुआ है जो डोरे से घिरा हुआ है। दर्मियान में एक बुलंद कच्चे चबूतरे पर कच्ची क़ब्र बनी है जिस का लौहे मज़ार पुख़्ता यानी पक्का है, नीम के चार पुराने दरख़्त हैं जिनसे पुराने होने के आसार नुमायां हैं और वो दरख़्त मज़ार पर साया अफ़गन हैं, क़ुरबो जवार के ख़ुश ऐतिक़ाद देहातियों ने चंद दरख़्त बेले और गेंदे के लगा रखे हैं, गर्ज़ कि बावजूद सादगी दिलक़श मक़ाम है, गांव वालों की ज़बानी मालूम हुआ कि अक्सर जुमेरात को यहां बाहर के लोग भी हाज़िर हुआ करते हैं। (बोस्ताने अख़्यार, पेज39.40)

लाल किर्ती (बाग़ सुल्तानपुर)

(2) बीबी ख़ाकी शाह

आप रहमतुल्लाह अलैहा शेर अली शाह दरवेशे कामिल रहमतुल्लाह अलैहा की मुरीदा और बाज़ लोगों के कहने के मुताबिक़ बीबी थीं, आप रहमतुल्लाह अलैहा की अक्सर करामात मशहूरो मारूफ़ हैं। लाल करती की मस्जिद के क़रीब अपने पीर रहमतुल्लाह अलैहा के मक़बरे में महवे राहत हैं, येह पक्का मक़बरा आप रहमतुल्लाह अलैहा ही के नाम से मौसूम और तकिया ख़ाकी शाह कहलाता है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज74)

(3) शेर अली शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह बारहवीं सदी के कामिल दरवेश हैं। किसी तज्किरे की किताब में आप रहमतुल्लाह अलैह के हालाते ज़िंदगी नज़र से नहीं गुज़रे। मगर ख़िरक़े आदात और करामात की अक्सर रिवायतें ज़बानी लोगों में मशहूर चली आती हैं।

शर्फ़ुन्निसा बेगम बिते आबिद ख़ां ज़ौजा मुहम्मद अमीन ख़ां ने एक सौ बीगा ज़मीन जो कि मुहम्मद अमीन ख़ां के मक़बरे से मिली हुई है तअल्लुक्का बाग़ सुल्तान पुर शहर आगरा आप रहमतुल्लाह अलैह के उर्स और मजालिस के अख़राजात के वास्ते हिबा की थी, जिसका फ़रमान मुआफ़ी नामा यानी वक़फ़ नामा ब तारीख़ 24 रजब, शाह आलम बादशाह के तख़्त नशीन होने के 48 वें साल ब मुताबिक़ 1211 हिजरी बनाम मुसम्मात ख़ाकी शाह (आप रहमतुल्लाह अलैह की मुरीदा)

साहिबे बोस्ताने अख़यार फ़रमाते हैं : येह नक़ल हसन बेग साकिन दर्जी पाड़ा के पास मौजूद है और मेरी नज़र से गुज़रा है।

मक़बरा मुहम्मद अमीन ख़ां का तो अब निशान भी बाक़ी नहीं रहा मगर आप रहमतुल्लाह अलैह का मक़बरा यानी मज़ार मुबारक मौजूद और लाल किर्ती के क़रीब तकिया ख़ाकी शाह के नाम से मौसूम है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के लिए वक़फ़ की हुई ज़मीन छावनी में आ गई जिसके मुआवज़ा यानी बदले में सौ रुपये सालाना के क़रीब मुख़्तलिफ़ लोगों को पेंशन मिलती है। (बोस्ताने अख़यार, पेज 90)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस मोबाइल नंबर (8808693818) पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

मैडिकल स्कूल

(4) अब्दुल्लाह शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के शुहदाए नामदार और मशहूर बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की अजीबो ग़रीब होश रुबा, ख़ारिके आदात करामात मशहूर हैं, अक्सर लोग बयान करते हैं कि आप रहमतुल्लाह अलैह तरीक़त में सिल्सिला नक़्शबंदिया की सिल्क में मुंसलिक और हज़रते शैख़ अबैदुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुलफ़ाए आज़म में से थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह का सर या उंगली सेंट जॉन्स कॉलेज और गिरजा सेब बाज़ार की दर्मयानी सड़क के किनारे पर हुज़रे के अंदर दफ़न है, जहां एक कनाती मस्जिद भी मौजूद है, और तन यानी जिस्म मुबारक मैडीकल स्कूल के बोर्डिंग और शिफ़ाख़ाना के दर्मियान में एक बुलंद टीले पर मदफ़ून है। जहां पक्की चहार दीवारी के अंदर एक बुलंद चबूतरे पर मज़ार बना हुआ है जिसके सिरहाने बहुत बड़ा चिराग़दान भी मौजूद है, इहाता के अंदर एक मस्जिद और बहुत सी पुरानी क़ब्रें वाक़ेअ हैं।

17 और 18 ज़िलहिज्जा को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है और कुछ अराज़ी ज़मीन भी पुराने ज़माने से माफ़ यानी वक़्फ़ चली आती है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज 101)

सुल्तानगंज

(5) सैय्यिद कबीर

आप रहमतुल्लाह अलैह मशाईख़ीने अकबराबाद में से हैं, 1018 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वक़्ात पाई, मज़ार मुबारक मुत्तसिल सुल्तानगंज

में वाक़ेअ है, “बा रहमत क़रीं बाद” के अदद 1018 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का हिजरी साल है। (बोस्ताने अख्यार, पेज142)

(6) सुल्तान मुहम्मद मासूम

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने के बुजुर्गों में से हैं, मज़ार मुबारक मुत्तसिल सुल्तानगंज पक्की सड़क से मशरिक़ यानी पूरब की जानिब खेतों के दर्मियान में वाक़ेअ है, बराबर बराबर लाल पत्थर के दो तावीज़ हैं जो सड़क से नज़र आते हैं, एक नीम और चंद बबूल के दरख़्त इन मज़ारात पर साया किये हुए हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार का तावीज़ मुनक्क़श और ख़ुशनुमा है और उस चंद शेअर लिखे हुए हैं।

सिरहाने पर सुल्तान मुहम्मद मासूम और पांइती पर हमीदुद्दीन हुसैन 989 हिजरी लिखा हुआ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज202)

(7) शाह यार मुहम्मद चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह शाहजहाँ बादशाह के ज़माने के अकबराबाद के बुजुर्गाने दीन में से हैं, विलायत और करामत में शाने आली और बुलंद मर्तबा हासिल था, उस्ताद ईसा आफ़न्दी जो रौज़ा मुमताज़ महल (ताज़ महल) के नक्क़शे को बनाने वाला बा कमाल नक्क़शा नवेस था आप रहमतुल्लाह अलैह के खास मोअतक्रिदीन में से था, आप रहमतुल्लाह अलैह ही की दुआ से आलमे ख़्वाब में उन्होंने इमारत की मौजूदा शक्ल व हैअत देख कर नक्क़शा बना कर बादशाह की ख़िदमत में पेश किया जो पसंदे ख़ातिर हो कर मंज़ूर किया गया।

अब तक ईसा आफ़न्दी के ख़ानदान के लोग जो नाला पीपल मंडी में आबाद और नक्क़शा नवेस कहलाते और अक्सर अब तक नक्क़शा नवेसी में उस्ताद हैं, ये लोग आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से ख़ास अक़्रीदत

रखते और हर साल रबीउस्सानी के महीने के पहले जुमा को मज़ार पर हाज़िर हो कर उर्स किया करते हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** सुल्तानगंज पक्की सड़क के क़रीब एक टीले पर वाक़ेअ है, मज़ार हुजरे के अंदर है जिसके क़रीब एक मस्जिद बनी हुई है। (बोस्ताने अख्यार, पेज251)

(8) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम ग़ैर मारूफ़ और **मज़ार मुबारक** बुजुर्गी और कमालात में मशहूर और तकिया मुत्तसिल बाग़ चोखे लाल चावल वाला पक्की सड़क के किनारे सुल्तानगंज में वाक़ेअ है, लौहे मज़ार सादा मगर चिरागदान में एक पत्थर लगा हुआ है जिस पर

قَالُوا إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

और इसके नीचे येह शेअर लिखा हुआ है :

ज़ तारीखे हिजरी शुदा आशकार

बयक रोज़ पांसद व बर सद चहार

(बोस्ताने अख्यार, पेज105)

(9) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह के नाम मुबारक का कुछ पता नहीं चल सका, बाग़ चोखे लाल चावल वाला वाक़ेअ सुल्तानगंज में एक कनाती मस्जिद बनी है उस के सेहन में आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** ज़ियारत गाह है। (बोस्ताने अख्यार, पेज105)

गोकुल पुरा (आगरा कॉलेज)

(10) शैख नासिर (शैख नाज़िर)

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम नासिर मुहम्मद बिन सैय्यिद हाजी और मशहूर नाम शैख नासिर और शैख नाज़िर है, हनफ़ी मज़हब और सिपाहियाना पर्दा में बड़े आरिफ़ कामिल और बहुत बड़े साहिबे बातिन बुज़ुर्ग थे, ख़ानवादाएँ क़ादरिया, चिशितिया, नक़््शबंदिया और शत्तारिया में सैय्यिद अहमद इब्ने सैय्यिद रफ़ीउद्दीन इब्ने सैय्यिद जाफ़र शीराज़ी गुजराती रहमतुल्लाह अलैह से इजाज़तो ख़िलाफ़त हासिल थी।

इब्तिदाएँ हाल में मुद्दत तक अहमदाबाद गुजरात में मुक़ीम रहे फिर बुज़ुर्गाने इस्लाम की सुन्नत पर कारबन्द हो कर बरसों सय्याही फ़रमाई और बहुत से ख़ुदा शनासों की सोहबत से फ़ायदा उठाया, उसी दौराने सयाहत शाहजहाँ बादशाह से कहीं मुलाक़ात हो गई और बादशाह के इसरार से यौमिया मंज़ूर फ़रमा कर मुलाज़िमत में रहना क़बूल फ़रमाया हमेशा सिपाहियाना लिबास में मुसल्लह और हाज़िरे ख़िदमत रहते मगर जो वज़ीफ़ा मिलता था वो अपने खर्च में ना लाते बल्कि ख़ैरात कर दिया करते थे, ख़िदमत से फ़ारिग़ हो कर जंगल से घास या लकड़ी ला कर बाज़ार में बेचा करते और उस की क़ीमत अपने खर्च में लाते थे, अक्सर औक़ात रोट्टी की जगह घास पत्ते आप रहमतुल्लाह अलैह की ग़िज़ा होती थी।

रात भर मुसल्लह बादशाही ख़्वाबगाह दरवाज़ा पर इबादतो रियाज़त में मसरूफ़ रहते, बादशाह, बेगमात, उमरा, वुज़रा वग़ैरा सब आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िद थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की अजीबो ग़रीब और होश रुबा ख़ारिक़् आदात उस ज़माने की मशहूर तारीख़ों, बादशाह नामा, मुल्ला अब्दुल हमीद लाहौरी, मिरातुल आलम, मुख़िबरुल

वासिलीन, तज़िकरतुल कुदमा और सियारुल मुताअख़िख़रीन वग़ैरा किताबों में दर्ज हैं, अक्सर आप रहमतुल्लाह अलैह ने पानी के क़तरे से मोती, बर्फ़ से सब्ज़ ज़मुरद, ठेकरियों से रुपये और अशर्फ़ियाँ, ख़ाक़ से नमक और मिस्री, चोबी मेख़ से मछली, रूमाल से कबूतर, संगरेज़ो से ख़ुश रंग अक़ीक़ व लालो मर्जान बना देते थे।

सब लोग इस किस्म की करामतें देखकर महवे हैरत होते थे, साहिबे तज़िकरतुल कुदमा का बयान है कि तमाम वहशी जानवर और परिंदे और जिन्नात आप रहमतुल्लाह अलैह के ताबे फ़रमान थे गोया कि सुलैमानी बादशाहत आप रहमतुल्लाह अलैह को हासिल थी।

एक दिन मजलिस में इल्मे कीमिया का कुछ ज़िक्र छिड़ रहा था, आप रहमतुल्लाह अलैह ने थोड़ी सी ख़ाक़ उठा कर एक शख्स के हाथ में दे दिया, देखा तो ख़ालिस सोना था।

एक मर्तबा बादशाह के रूबरू क़व्वाली की मजलिस मुन्अक़िद हुई, आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़ब्रए इलाही में बेख़ुद हो कर पानी मांगा थोड़ा सा ख़ुद पिया, बाक़ी दीगर हाज़िरीने मजलिस में तक्रसीम कर दिया, जिसने पिया ख़ालिस शहद का मज़ा पाया।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़िक्रे कुर्बान को कमाल के दर्जा तक पहुंचा दिया था, जब उस का शुग़ल फ़रमाते तो तमाम जिस्म के आज़ा बंद बंद कर के जुदा हो जाते थे, जो ज़िक्र के बाद फिर यकजा हो कर अपनी असली हालत पर आ जाते थे, एक मर्तबा राजा बिक्रमाजीत शाहजहानी ने रात के वक़्त जबकि वो भी चौकी पर हाज़िर था इस हालत में आप रहमतुल्लाह अलैह को देखा था।

बहुत से तालिबाने खुदा आप रहमतुल्लाह अलैह की बदौलत खुदा शनास हो गए। 13 जुमादस्सानी 1057 हिजरी ब मुताबिक 1647 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैह विसाल फरमा गए।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक पक्की सड़क के किनारे (डेरैमंड रोड या ठंडी सड़क) मुत्तसिल मुहल्ला गोकुल पुरा आगरा कॉलेज वाक़ेअ है, जिसका तावीज़ ताबूत नुमा एक बुलंद चबूतरे पर बना हुआ है, पहले इस पर आलीशान गुंबद था जो मुन्हदिम यानी गिरा दिया गया, लौहे मज़ार पर तारीख़ लिखी हुई है

वासिले हक़ शैख़ नाज़िर शाह ज़ीं दारे फ़ना

राही मुल्के बक्रा ग़शतो रसीदा शाद काम

(बोस्ताने अख़्यार, पेज 222.224)

मदार दरवाज़ा

(11) सैय्यिद नज्मुद्दीन मुहम्मद (मौलाना क़ासिम काबुली)

आप रहमतुल्लाह अलैह के पैदाइश की जगह काबुल है। उर्फ़े आम “मियां काले”, ख़िताब मौलाना क़ासिम और तखल्लुस “काही” था। खुद फ़रमाते हैं:

काही तो बुलबुले चमन आराए काबुली

ज़ाग़ो ज़ग़ान ना कि बह हिन्दुस्तान शवी

आप रहमतुल्लाह अलैह को इल्मे तफ़सीर, हैयत, तसव्वुफ़, मुअम्मा और तारीख़ में कामिल महारत हासिल थी, शायरी में तो ऐसा कमाल

हासिल था कि सब औसाफ़ इस में छुप गए थे । अक्सर बुजुर्गों की खिदमत से फ़ैज़ हासिल था ।

15 बरस की उम्र में मौलाना अब्दुर्रहमान जामी रहमतुल्लाह अलैह की खिदमत से भी अज़मत हासिल की थी, अकबर बादशाह के ज़माने में भक्कर के रास्ते से हिन्दुस्तान में वारिद हुए और एक क़सीदा के सिला में एक लाख टंका इनाम पाया । फिर किसी बात से बरदाश्ता खातिर हो कर बनारस को बहादुर ख़ान बिरादर ख़ान ज़माँ के पास चले गए, कुछ मुद्त वहां रह कर फिर आगरा में तशरीफ़ लाए और बक़ीया उम्र गोशए तन्हाई में बसर कर के 2 रबीउस्सानी 988 हिजरी को 110 बरस की उम्र में रेहलत फरमा गए ।

मौलाना क़ासिम बुख़ारी शागिर्दे रशीद ने 'रफ़्त मुल्ला क़ासिम काही' तारीख़ मौजूं की ।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मदार दरवाज़ा के क़रीब वाक़ेअ था जिसका अब पता नहीं चलता । और “मस्नवी गुल अफ़शाँ” जो बोसतान के जवाब में है आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार है ।

(बोस्ताने अख़बार, पेज225.226)

मस्जिद मदन मोहन दरवाज़ा और सेंट जॉस कॉलेज

(12) नन्हे मियां

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने ख़ुदा शनासों में हैं, किसी को आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम मालूम नहीं है, नन्हे मियां के नाम से मशहूर हैं ।

आप रहमतुल्लाह अलैह की कई करामतें मशहूर हैं जिनमें एक येह भी है कि एक बनिया नूरी दरवाज़ा से जहां आप रहमतुल्लाह अलैह मुक़ीम थे शकर

खरीद कर के घोड़े पर लादे हुए आप रहमतुल्लाह अलैह के पास से गुज़रा आप रहमतुल्लाह अलैह ने दरयाप्त किया कि गौन में क्या है ? उस की ज़बान से निकल गया कि नमक है, गांव में पहुंच कर जब गौन को खोला तो शकर की जगह नमक देखा । येह देख कर बहुत घबराया और रोता पीटता आप रहमतुल्लाह अलैह के पास आ कर क़दमों पर गिर पड़ा । आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया जाकर देख शकर ही तो है । जब घर पहुंचा तो गौन में शकर को पाया ।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मस्जिद मदन मोहन दरवाज़ा और सेंट जॉस कॉलेज की दीवारों के दर्मियान में वाक़ेअ है, वहां तक पहुंचने का अब कोई रास्ता बाक़ी नहीं, मस्जिद की दीवार या कॉलेज की इमारत मुल्हक़ा से अलबत्ता ज़ियारत हो सकती है, राक़िमे बोसतान मस्जिद की छत पर चढ़ कर ज़ियारत से मुशरफ़ हुआ ।

दोनों दीवारों के दर्मियान में एक छोटा सा हिस्सा छूटा हुआ है, अगर मस्जिद की जुनूबी यानी दख्खिन दीवार में एक दरवाज़ा खोल दिया जाये तो बहुत मुनासिब है ।(बोस्ताने अख़्यार, पेज229.230)

सुल्तान पुरा, काछी पुरा

(13) मिर्ज़ा अबू तुराब

आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक़रे ख़ैर किसी किताब में नज़र से नहीं गुज़रा । मुहल्ला सुल्तान पुरा के क़रीब काछी पुरा नाम का एक गांव है इस से मुत्तसिल आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वाक़ेअ है जिस से क़ुरबो जवार के लोग ख़ास अक़ीदत रखते हैं ।

आप रहमतुल्लाह अलैह का नामे नामी और तारीखे वफ़ात 4, रबीउस्सानी, 1063 हिजरी मज़ार पर लिखा हुआ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 36)

आगरा वालों के लिए 12 किताबों का तोहफ़ा

आगरा वाले आशिकाने औलिया के लिए खुशख़बरी ! आगरा के औलियाए किराम की सीरत पर मुश्तमिल 12 किताबों को हासिल कर के पढ़ें और दूसरों को तकसीम कर के फैज़ाने औलिया को आम करें।

- (1) आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत
- (2) सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत
- (3) आगरा के ग़ौस शाह मुबारक ग़ौस और 8 औलियाए किराम की सीरत
- (4) लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (5) हींग की मंडी व नाई की मंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत
- (6) बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत
- (7) जमना पार (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (8) मिर्ज़ा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत
- (9) कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत
- (10) कब्रिस्तान पीर गिलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत
- (11) ताजगंज (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (12) शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत
- (13) सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलियाए किराम की सीरत
- (14) नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलियाए किराम की सीरत
- (15) सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत
- (16) शैख सलीम चिश्ती की सीरत व फतेहपुर सीकरी की हिस्ट्री

मुसन्नफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊँ अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्बए नूरे ख़ुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिरागे पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
ख़ानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिशती सुहर्वदी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते ख़ुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकू का तज़्जिरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की ख़ाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की ख़ाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औक्रात क्या बेख़ुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं
शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

बोस्ताने खैर ला कर बोस्ताँ महका दिया

बोस्ताने खैर ला कर बोस्ताँ महका दिया
अहले सुन्नत के अकीदे को बड़ा चमका दिया
भूल बैठे दौलते दुनिया के चक्कर में जिन्हें
उन बुजुर्गों का तआरुफ़ आप ने करवा दिया
आगरा वालों पे हज़रत का बड़ा ऐहसान है
रब ने उनके हाथ से सच का अलम लहरा दिया
निस्बते मदनी से यूँ तो जल रहे थे पेशतर
और क़लम ने फिर जलन को और भी भड़का दिया
हक़ लिखा, बेबाक़ लिखा, ख़ौफ़े बातिल कुछ ना था
सच के शोअलों से हर इक़ फ़ितने को यूँ धमका दिया
इस शफ़ीक़े क़ादरी का रख तरो ताज़ा क़लम
जिस ने भूले रास्तों को रास्ते पे ला दिया
कब किसी मंसब की चाहत, कब सिले की आरज़ू
सिर्फ़ निस्बत ने येह सारा काम ही करवा दिया
जम रही थी धूल माज़ी के तख़य्युल की मगर
किस ने बेख़ुद आगरा को आईना दिखला दिया

शायर : वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

फेहरिस्त

मुसन्निफ़ का तआरुफ़.....	3
मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा	6
आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़	7
आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	15
शाहगंज व अतराफ़ के 12 औलियाए किराम की प्यारी सीरत	18
शाहगंज	18
(1) शैख़ अबू बक्र कुरैशी	18
लाल किर्ती (बाग़ सुल्तानपुर)	19
(2) बीबी खाकी शाह	19
(3) शेर अली शाह	20
मैडिकल स्कूल.....	21
(4) अब्दुल्लाह शहीद	21
सुल्तानगंज	21
(5) सैय्यिद कबीर	21
(6) सुल्तान मुहम्मद मासूम	22
(7) शाह यार मुहम्मद चिश्ती	22
(8) अब्दुल्लाह	23
(9) अब्दुल्लाह	23
गोकुल पुरा (आगरा कॉलेज)	24
(10) शैख़ नासिर (शैख़ नाज़िर)	24

मदार दरवाज़ा	26
(11) सैय्यिद नज्मुद्दीन मुहम्मद (मौलाना क़ासिम काबुली)	26
मस्जिद मदन मोहन दरवाज़ा और सेंट जॉस कॉलेज	27
(12) नन्हे मियां	27
सुल्तान पुरा, काछी पुरा	28
(13) मिर्ज़ा अबू तुराब	28